ADVERTORIAL

सहज योग - पूर्ण स्वतंत्रता के लिए स्वयं को जानिए

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

सहज योग संस्थापिका एवं
कुण्डलिनी जागरण द्वारा
आत्म–साक्षात्कार दात्री

अन्तर्राष्ट्रीय सहज योग स्वर्ण जयंती वर्ष • परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

स्वर्ण जयंती
1970 - 2020
जन-कल्याण के 50 वर्ष

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

स्वतन्त्रता से 'स्व के तंत्र' की ओर

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी, जिन्हें समूचे विश्व में बहुत सम्मान)से श्री माताजी के नाम से जाना जाता है, उनका जन्म भारत के भौगोलिक मध्य में स्थित छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश में 21 मार्च 1923 को एक बहुत ही सज्जन और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। अपनी स्कूली शिक्षा के पश्चात उन्होंने मेडिकल और मनोविज्ञान की पढ़ाई क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लाहौर से की।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

श्री माताजी शालीवाहन के राजसी परिवार की वंशज हैं जो राहुरी के समीप श्रीगाँव सहित एक राज्य पर राज किया करते थे। श्री माताजी ने स्वयं बताया कि उनके पूर्वज (दादाजी के दादाजी) मराठा राजवंश से थे (हिन्दू राजवंश में एक योद्धा जाति)। इस राजकुल का आधिपत्य दक्षिण में हैदराबाद तक फैला हुआ था। हैदराबाद में राजा शालीवाहन की प्रतिमा उनके काल के गौरव और पूर्वजों की जड़ों को प्रमाणित करती है। यह दर्ज है कि यह वंशावली प्रसिद्ध सतवाहन राजाओं के सीधे वंशज हैं जिनका संबंध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के राजवंश से था।

श्री माताजी के पिता श्री प्रसादराव केशवराव सालवे, जो कि पी. के. साल्वे के नाम से ज़्यादा प्रसिद्ध थे, एक सफल वकील और चौदह भाषाओं के ज्ञाता थे। श्री पी. के. साल्वे की कला, साहित्य और विज्ञान में अच्छी ख़ासी पकड़ थी और स्वतन्त्रता पश्चात उन्होंने अरबी, उर्दू और हिन्दी में बहुत कम समय में महारथ हासिल कर ली। इसी कारण मौलाना आज़ाद के कहने पर उन्होंने मौलाना की कुरान पर लिखी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी किया। वे स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी के बहुत करीबी थे और संविधान सभा के सदस्य भी थे। स्वतंत्र भारत का संविधान लिखने में उनका भी योगदान था।

श्री माताजी की माँ, श्रीमती कोर्नेलिया करुणा सालवे गणित में हॉनर्स डिग्री हासिल करने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। वह संस्कृत की भी विद्वान थीं और पौराणिक भारतीय संस्कृति पर उनकी गहरी पकड़ थी।

परिवार

7 अप्रैल 1947 को श्री माताजी का विवाह श्री चंद्रिका प्रसाद श्रीवास्तव से हुआ, जिनकी गिनती भारत के अग्रिम पंक्ति के प्रतिष्ठित एवं समर्पित प्रशासनिक अधिकारियों में की जाती है। सर सी. पी. श्रीवास्तव को 1990 में इंग्लैंड की महारानी द्वारा नाइटहुड (सर की पदवी) से नवाज़ा गया। 1964-66 के दौरान वे भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के संयुक्त सचिव रहे। तत्पश्चात वे संयुक्त राष्ट्र का अंतरराष्ट्रीय मेरीटाइम संगठन के चेयरमैन एवं मैनिजिंग डिरेक्टर बने। इसके बाद उन्हें लगातार 16 वर्षों के लिए संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के सेक्रेटरी जनरल के रूप में चुना गया। सर सी. पी. श्रीवास्तव ने अपने कार्यकाल में समर्पण और निष्ठा के नए मापदंड स्थापित किए और उसी के फलस्वरूप उन्हें पद्म विभूषण, लाल बहादुर शास्त्री अकादमी सम्मान तथा अनेकों अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए। सर सी. पी. श्रीवास्तव और श्री माताजी की दो बेटियाँ हैं।

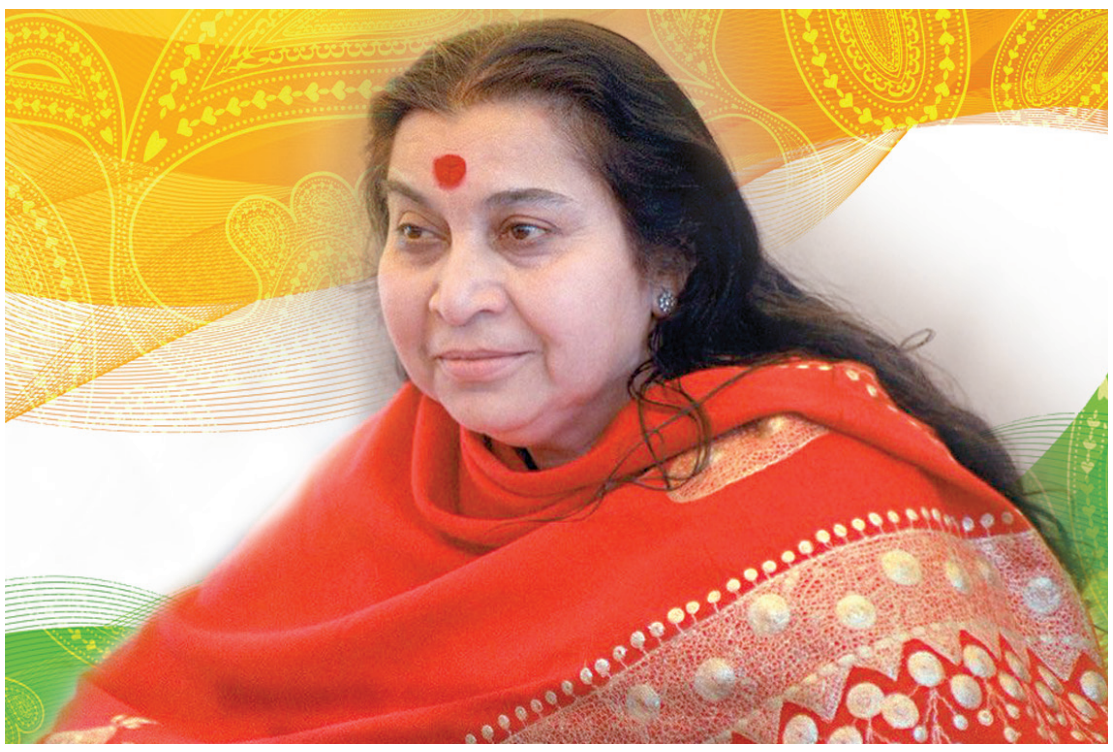

सहज योग पूर्णत: नि:शुल्क

जन्म स्थान छिंदवाड़ा (म.प्र.)
21 मार्च 1923

निर्मल धाम दिल्ली (समाधि)
23 फरवरी 2011

सहज योग की शुरुआत ('स्व' के तन्त्र की यात्रा)

बचपन से ही श्री माताजी को यह ज्ञात था कि उनके पास एक अद्भुत आध्यात्मिक देन है जिससे मानव को उसके भय और तकलीफ़ों से मुक्ति दिलाई जा सकती है ताकि वह एक स्वस्थ और आनंदमयी जीवन व्यतीत कर सके। यहाँ तक कि उनके पिता को भी मालूम था कि उनकी बेटी में जन्म से कुछ दुर्लभ गुण विद्यमान हैं, जिनके माध्यम से मानवता के परिवर्तन के एक नए युग की शुरुआत की जा सकती है। गांधीजी के साथ श्री माताजी के वार्तालाप को एक अरसा हुआ था परंतु मृत्यु के कुछ पहले ही उन्होंने श्री माताजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की। श्री माताजी से मिलने पर उन्होंने याद दिलाया कि श्री माताजी मानव को परिवर्तित करने के अपने कार्य को कब करने वाली हैं। अपने गृहस्थ जीवन की व्यस्तताओं के बीच श्री माताजी मानव की विभिन्न तकलीफ़ों के बारे में लगातार शोध करती रहीं और साथ ही वो समाधान भी तलाशती रहीं जिससे मानव के दुख और पीड़ा को हरा जा सके। काफ़ी सालों के बाद श्री माताजी ने मानव के उत्थान के इस कार्य को शुरू किया। श्री माताजी का यह आध्यात्मिक कार्य कुछ ही लोगों तक सीमित नहीं रहा बल्कि देश की सीमाओं को लांघकर, विश्व भर में लाखों लोगों को परिवर्तित कर चुका है और कर रहा है।

अतः 5 मई 1970 को उन्होंने सहज योग शुरू किया, जो हर मनुष्य में सुप्तावस्था में मौजूद कुंडलिनी शक्ति के जागरण द्वारा आत्म–साक्षात्कार को पाने की अनुपम विधि है। श्री माताजी ने इस अनुभव को ''स्व–तंत्र'' का नाम दिया है जो कि ''स्व'' को जानने की विधि है। कुंडलिनी को ब्रह्मांड में फैली हुई परमेश्वर की शक्ति से स्वयं को एकरूप करने की शुद्ध इच्छा के रूप में समझा जा सकता है। आत्मसाक्षात्कार धर्म, जाति, सामाजिक स्थिति से कोई लेन–देन न रखता हुआ, हर किसी का जन्मसिद्ध अधिकार है।

2011 तक के चार दशकों में उन्होंने विश्व भर में लोगों को सहज योग का ज्ञान दिया और उन्हें परिवर्तित किया। इस आध्यात्मिक आंदोलन में लाखों लोगों ने अपना आत्म–साक्षात्कार प्राप्त किया और अपनी सुप्त शक्ति को जगा कर अनेकों लाभ पाए।

एक जानी–मानी वक्ता, करुणामयी पथ–प्रदर्शक और समाज–सेविका होते हुए, श्री माताजी को विश्व भर में एक आध्यात्मिक अगुआ के रूप में बहुत प्रेम और आदर दिया जाता है। उन्हें न केवल नोबल शांति सम्मान के लिए नामांकित किया गया, बल्कि विश्व भर में उन्हें अनेकों सम्मान दिए गए। उन्होंने मानव कल्याण हेतु मुंबई में एक सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं शोध केंद्र स्थापित किया, बेसहारा महिलाओं और बच्चियों के लिए दिल्ली में एक आश्रम बनाया और शास्त्रीय संगीत तथा कला से लोगों को जोड़ने के लिए वैतरणा में अंतर्राष्ट्रीय संगीत अकादमी स्थापित की।

श्री माताजी का मानवता को संदेश

स्वतन्त्रता

मनुष्यों को स्वतन्त्रता को एक परित्याग के तौर पर नहीं, अपितु आनंद को पूरी तरह से उठा सकने की अवस्था के तौर पर लेना चाहिए। जो स्वतंत्रता विध्वंस की तरफ ले जाये वो स्वतन्त्रता नहीं है। इसे सही तरह से समझना चाहिए। और लोगों को यह ज्ञात होना चाहिए कि स्वतन्त्रता, पूर्ण स्वतन्त्रता, वह होती है जब आप स्वयं के गुरु बन जाते हैं; जब कोई आदतें नहीं होतीं और आप पर कुछ भी हावी नहीं हो पाता। आप सबसे ऊपर होते हैं। यही है वह स्वतन्त्रता जो आपको प्राप्त करनी है।

शांति अंदर और बाहर

बिल्कुल, अंदरूनी शांति ही बाहर शांति स्थापित करेगी।

विश्व बंधुत्व

हम यहाँ विश्व बंधुत्व की बात कर रहे हैं। इसमें आपकी जाति, समाज, रंग, देश,अन्य देश, आदि सब छोड़ देना चाहिए। यह झूठी मर्यादाएँ हैं। आप सब एक ही माँ की सन्तानें हैं। तभी हम विश्व बंधुत्व तक पहुँच पाये हैं।

वर्तमान में सहज योग

गत 50 वर्षों में सहज योग 140 से भी अधिक देशों में पहुँच चुका है। जिन लोगों ने आत्म–साक्षात्कार लिया है और नियमित रूप से ध्यान–धारणा भी कर रहे हँ वे भारत सहित अनेक देशों में नए साधकों को नि:शुल्क प्रशिक्षण दे रहे हैं। वर्तमान में लॉकडाउन परिस्थितियों के कारण, सहज योग ध्यान ऑनलाइन माध्यम से यूट्यूब इत्यादि पर सहज योग के चैनलों के माध्यम से कराया जा रहा है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

श्री माताजी एक समर्पित स्वतन्त्रता सेनानियों के परिवार से आती हैं। उनके माता–पिता उनके लिए बड़ा उदाहरण थे जिन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान स्वतंत्रता संग्राम में बड़ा योगदान दिया। श्री प्रसाद राव और श्रीमती कोर्नेलिया सालवे को अपने देश से गहन प्रेम था, और भारतीय आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्य उनके जीवन का अंग–प्रत्यंग थे। उनके माता–पिता महात्मा गांधी से पहली बार 1925 में मिले थे जब श्री माताजी की उम्र मात्र 2 वर्ष थी। इस मुलाकात ने उन दोनों पर एक गहरा असर छोड़ा। उन्होंने महात्मा के अहिंसा के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने के स्वप्न को पूरी तरह से स्वीकार किया।

श्री माताजी का जन्म इतिहास के एक बहुत ही महत्वपूर्ण समय पर हुआ। दुनिया इस समय प्रथम विश्व युद्ध की तकलीफ़ों से उबर रही थी और उसी समय दूसरे विश्व युद्ध के बादल भी मंडराने लगे थे। अंग्रेजों के शोषण के कारण भारत–भूमि त्राहिमाम कर रही थी। उनका जन्म भारत माँ के स्वतन्त्रता संग्राम में एक विशिष्ट काल का आगमन था।

उनके त्यागों की गाथा मात्र आठ साल की उम्र से शुरू हो गई जब स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण उनके माता–पिता को बार बार जेल जाना पड़ा। इस नाज़ुक उम्र में श्री माताजी को अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल करनी होती थी जिससे उनकी पढ़ाई बाधित ना हो। बाल्यकाल में श्री माताजी का काफ़ी समय महात्मा गांधी के आश्रम में उनकी देखरेख में गुज़रा जब उनके माता–पिता पूरी तरह से स्वयं को स्वतन्त्रता संग्राम में झोंक चुके थे।

हालांकि श्री प्रसाद राव को अंग्रेज़ों से एक पदवी भी मिल चुकी थी (उस दौर में ईसाई होने के कारण अंग्रेज़ों द्वारा अनेकों विशेषाधिकार दिये जाते थे), फिर भी दोनों पति–पत्नी ने खुल के आज़ादी के आंदोलन में हिस्सा लिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर, स्वदेशी अपनाकर, और नागपुर में भरे चौक पर विदेशी कपड़ों को जलाकर उन्होंने अपना मत स्पष्ट किया। आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी और उसके कारण जेल जाने के कारण उन्होंने घर पर एक स्पष्ट नियम बना दिया था कि इसके लिए घर में कोई एक आँसू भी नहीं बहाएगा। भारत माँ की स्वतंत्रतासर्वोपरी थी और त्याग ही जीवन की परिभाषा थी। अपने आरामदायक घर को त्यागनेके कारण उन्होंने बेहद सादा जीवन अपना लिया जिसमें झोंपड़ी में रहना, धरती पर सोना और कई बार बिना भोजन के रहना शामिल था।

श्री माताजी और महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी के निकट जो भी आया वो उनसे प्रभावितहुए बिना नहीं रह पाया। श्री माताजी भी उनके आश्रम में रहने के दौरान उनसे बहुत प्रभावित हुईं। श्री माताजी को गाँधी जी 'नेपाली' नाम से बुलाते थे क्योंकि श्री माताजी का चेहरा नेपाली लगता था।

सात वर्ष की उम्र से ही श्री माताजी ने गाँधीजी के आश्रम में बहुत समय व्यतीत किया। गाँधी जी की सामूहिक प्रार्थना सभा से पहले की सुबह की सैर में श्री माताजी अक्सर उनका साथ दिया करती थीं। श्री माताजी के अनुसार गाँधीजी अनुशासन के मामले में बहुत सख़्त थे किंतु बहुत प्रेममयी और करुणामयीभी थे। वे हमेशा श्री माताजी के साथ चर्चा करते थे क्योंकि उनका कहना था कि बड़े लोगों के मुक़ाबले कुछ बच्चों से बेहतर मार्गदर्शन मिल सकता है।

इस देश में धर्म, सत्य–परायणता या अंदरूनी धर्म के आधार को स्थापित करने के लिए श्री माताजी अक्सर गाँधीजी की प्रशंसा किया करती थीं। गाँधीजी लोगों को सभी धर्मों के सार तत्त्व को जानने और अध्यात्मिकता की गहराई को पाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। वे कई बार बाइबल या फिर भगवद् गीता की बात करते थे। यह इन महान ग्रन्थों और विश्व भर के महान लोगों में बसी हुई हमारी अपनी विरासत एवं मूल्यों से परिचित होने के लिए था। श्री माताजी के साथ बातचीत में वे न केवल मानव के व्यक्तित्व पर चर्चा करते थे बल्कि साथ ही आध्यात्मिक और सामाजिक स्वतन्त्रता को कैसे प्राप्त करें इसपर भी मनन होता था।

गाँधीजी का कहना था कि जब स्वतंत्रता संग्राम गति पकड़ रहा है तो यह बहुत आवश्यक है कि सख़्त अनुशासन बना के रखा जाये। इस पर श्री माताजी ने कहा, बापू, आप लोगों को अनुशासित करना चाहते हैं तो क्यों ना उनके भीतर का अनुशासन जगाया जाये? गाँधी जी के यह पूछने पर कि यह कैसे होगा श्री माताजी ने उन्हें भरोसा दिलाया कि आंतरिक परिवर्तन ही इसका उपाय है।

आने वाले वर्षों में गाँधीजी का संदेश आम से लेकर ख़ास तक, किसान से लेकर विद्वानों तक फैल गया। श्री माताजी ने भी स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और अन्य कॉलेज छात्रों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन

श्री माताजी का आज़ादी की लड़ाई में शामिल होना बहुत ख़ास रहा है। वे बहुत निडर थीं और एक युवा नेत्री की भूमिका को उन्होंने बखूबी निभाया।

क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लाहौर में पढ़ने के दौरान श्री माताजी एक युवा नेता के तौर पर उभर कर आईं और उन्होंने 1942 के महात्मा गाँधी के भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने छात्रों के स्वतन्त्रता संग्राम की अगुआई की जिसके कारण कई बार उन्हें गिरफ़्तार किया गया, उन्हें प्रताड़ित भी किया गया परंतु इसके कारण न तो वे कभी डरीं और न ही उन्होंने अपने कदम पीछे हटाए। उनका चित्त हमेशा दूसरों की भलाई पर रहता। एक बार तो अंग्रेज़ों ने उन्हें प्रताड़ित करने के लिए उन्हें बर्फ़ की सिल्ली पर भी लिटाया पर उनकी असीम आत्म–शक्ति को ज़रा भी कम नहीं कर सके। स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी सक्रिय भागीदारी के चलते उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। हालांकि श्री माताजी ने बताया कि कैसे एक वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी, आचार्य विनोबा भावे ने उन्हें समझाया था कि पढ़ाई पूरी करो और आज़ादी के आंदोलन में हिस्सा मत लो, परंतु उनके पिता ने उन्हें अपने निर्णय पर डटे रहने की सलाह दी। जब कॉलेज में पुलिस आंदोलन कर रहे छात्रों को तितर–बितर करने आई तो मुख्य द्वार पर श्री माताजी न केवल खड़ी रहीं बल्कि बंदूकों की नलियों में आँख डालकर आज़ादी के नारे भी लगाए। उनके कॉलेज के प्रिन्सिपल, जो यह सब देख रहे थे,समझ गए कि श्री माताजी महान शक्ति की स्वामिनी हैं।

सहज योग परिवारभारत माँ की रक्षा और स्वतन्त्रता हेतु अपना अमूल्य जीवन न्यौछावर करने वाले सभी स्वतन्त्रता सेनानियों को हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता है

यह प्रस्तुति अप तक **सहज योगियों की टीम** द्वारा लाई गई है। ई-मेल Email: mbratan@gmail.com | sahajayoga.org | sahajayoga.org.in | nirmaldham.org | sahajayogamumbai.org